

मुकदमों का विवरण

अनिल कुमार बनाम।

केरल राज्य

(2023 की आपराधिक अपील संख्या 2697) 1 नवंबर, 2023

[अभय एस. ओका और पंकज मिट्टल, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय:चाहे तत्काल मामले की परिस्थितियों में, अपीलार्थी का मृतक को मारने का कोई पूर्व नियोजित मन था या क्या यह गंभीर और अचानक उकसावे के कारण था जो हत्या के बराबर नहीं होगा या सबसे अच्छा गैर-इरादतन हत्या का मामला होगा जो हत्या के बराबर नहीं होगा, जिसके लिए 10 साल तक की अवधि के कारावास या एफ. आई. एन. ई. या दोनों के साथ दंडनीय होगा। 304 भारतीय दंड संहिता सी. का भाग-II।

दंड संहिता, 1860 -एस. 303 और एस. 304 भाग-2 अभियोजन मामला कि अपीलार्थी ने अपनी पत्नी को मारने के इरादे से एक माचिस की छड़ी जलाई और उस पर फेंक दिया जब वह अपीलार्थी के साथ झगड़े के कारण पहले ही अपने ऊपर मिट्टी का तेल डाल चुकी थी-पत्नी की मृत्यु हो गई-अपीलार्थी को यू/एस. एस. दोषी ठहराया गया था। 302 और नीचे दिए गए दोनों न्यायालयों द्वारा भारतीय दंड संहिता सी. 498-ए-अपीलार्थी ने तर्क दिया कि धाराओं के प्रावधान। 302 भारतीय दंड संहिता सी. लागू नहीं होती है और उस पर यू/एस. के तहत आरोप लगाया जा सकता है। 304 भारतीय दंड संहिता सी. का भाग-II-स्वामित्व:

आयोजित किया गया:पहली मृत्यु घोषणा कथन Ext.P1 के रूप अंतर्गत होती है और दूसरा कथन जिसे मृत्यु घोषणा के रूप अंतर्गत पढ़ा जा सकता है, वह है Ext.P1 0-दोनों बयान, यदि एक साथ पढ़े जाते हैं, तो यह पता चलता है कि दुर्भाग्यपूर्ण दिन, अपीलार्थी ने मृत पत्नी पर शराब के नशे अंतर्गत हमला किया था-उसने उसकी छाती पर भी प्रहार किया और उसे धक्का दिया-जब अपीलार्थी का हमला असहनीय हो गया, तो उसने रसोई से मिट्टी के तेल की बेंत ले ली और उसे उसके शरीर पर डाल दिया, जिसके बाद उसके पति ने एक माचिस की छड़ी जला दी और उसे जला दिया-मजिस्ट्रेट-पीडब्लू 5, जिसके सामने मृत्यु घोषणाओं अंतर्गत से एक दर्ज किया गया था, बयान की शुद्धता साबित करता है-अपीलार्थी अंदर था।

शराब पीने की आदत और नशे की हालत में बार-बार हमला करने की आदत-पीड़ित ने यह भी कहा कि इसी तरह के हमलों के संबंध में अपीलार्थी के खिलाफ विभिन्न आपराधिक मामले लंबित हैं-उपरोक्त पहलू, जैसा कि मृतक ने कहा है, पी. डब्ल्यू. 21 (इन्वेस्टिगेटिंग ऑफिसर) की गवाही से पुष्टि हुई-घटना के दिन, उनके झगड़े के दौरान, एक पड़ोसी-पी. डब्ल्यू. 1 उनके घर गया था और मृतक पत्नी ने हमले के दौरान उसे कुछ चोटें दिखाई थीं-हालांकि, दोनों के बीच झगड़े को महसूस करते हुए, वह यह कहते हुए चला गया कि वह बाद में आएगा-इसके बाद मिट्टी का तेल डालने और जलाने की घटना हुई-इसलिए, दोनों कृत्यों और उसके बीच पर्याप्त समय था। 300 भारतीय दंड संहिता सी. ताकि मामले को धारा-II के दायरे में लाया जा सके। 304 भारतीय दंड संहिता . [पारस 11,12,13,14,15,20 और 21]

नगरों और अन्य संदर्भों की सूची

कालूराम बनाम राजस्थान राज्य (2000) 10 एस. सी. सी. 324-निर्दिष्ट।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन आक्षेपित हैं

आपराधिक अपीलीय आधिकारिता :2023 की आपराधिक अपील No.2697

2015 के सी. आर. एल. ए. No.1217 में एर्नाकुलम में केरल उच्च न्यायालय के दिनांकित <आई. डी. 1 के निर्णय और आदेश से।

रूप:

सुश्री अपर्णा झा, अभिषेक यादव, सुश्री प्रियंका माथुर, सुश्री इप्सिता बेहुरा, सुश्री पूजा सिंह, सुश्री गीता वर्मा, सुश्री जेसी कुरियन, सुश्री रूबी मोहम्मद। वसीम, एड. अपीलार्थी के लिए।

अब्राहम मैथ्यू, निशे राजन शोंकर, श्रीमती अनु के जॉय, आलिम अनवर, अधिवक्ता।
उत्तरदाता के लिए।

175

अनिल कुमार बनाम केरल राज्य 176

सर्वोच्च निर्णय के निर्णय का निर्णय/आदेश

पंकज मिट्टल, जे.

1. अपीलार्थी अनिल कुमार को नीचे की दोनों अदालतों द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 302 और 498 ए के अंतर्गत दोषी ठहराया गया है और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है और भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 302 के अंतर्गत एक साल के लिए साधारण कारावास और भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 498 ए के अंतर्गत एक साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई है, इस निर्देश के साथ कि दोनों सजाएं एक साथ चलेंगी।

2. घटना 26.09.2010 की है और 9 बजे हुई थी:00 मैं सुबह अपीलार्थी के घर पर हूँ। आरोप यह है कि अपीलार्थी ने अपनी पत्नी को मारने के इरादे से एक माचिस की छड़ी को जलाया और उस पर फेंक दिया, जब वह अपीलार्थी के साथ झगड़े के कारण पहले ही अपने ऊपर मिट्टी का तेल डाल चुकी थी।

3. आई. डी. 1 दिनांकित एफ़. आई. आर. No.621/2010 शुरू में भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 307 के अंतर्गत दर्ज की गई थी जिसमें कहा गया है कि मृतक पत्नी ने अपीलार्थी द्वारा उसे किए गए असहनीय मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न के कारण, अपीलार्थी को उसे और यातना देने से रोकने के लिए अपने ऊपर मिट्टी का तेल डाला और अपीलार्थी ने उसे मारने के स्पष्ट इरादे से स्थिति का लाभ उठाया और माचिस जलाया और "यू डाई" कहते हुए अपने शरीर पर फेंक दिया। इस प्रकार, मृतक पत्नी को मारने के स्पष्ट इरादे से अपीलार्थी द्वारा उनके आवास पर जलने की चोटों से पीड़ित किया गया था। इसके बाद, जब मृतक पत्नी की अस्पताल में मृत्यु हो गई, तो मामले को भारतीय दंड संहिता की धारा 272 और 498 ए के अंतर्गत मामले में बदल दिया गया।

4. उपरोक्त एफ़. आई. आर. के आधार पर, अपीलार्थी पर एक्सोरिसाइड का आरोप लगाया गया था।

5. अभिलेख पर एक स्पष्ट और निर्णायक साक्ष्य है कि अपीलार्थी दहेज की मांग करके मृतक पत्नी को परेशान करता था और दोनों में बहुत झगड़ा होता था। दोनों के बीच शादी घटना की तारीख से लगभग 11 साल पहले और उनके विवाह से हुई थी।

1 "आई. पी. सी. ", संक्षेप में

/

[2023] 14 एस सी आर।

एक लड़का और एक लड़की। घटना के समय, उनके बच्चे आंगन में खेल रहे थे और लड़के ने, कम उम्र के होने के बावजूद, अपदस्थ कर दिया था कि अपीलार्थी को अपनी पत्नी को पीटने की आदत थी और उसके माता-पिता के बीच अक्सर झगड़ा होता था।

6. निचली विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय के समक्ष अपीलार्थी का बचाव यह था कि वह अपनी पत्नी को जलाने का बिल्कुल भी दोषी नहीं है। उनमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति थी और उन्होंने पहले भी एक बार आत्मदाह करने की कोशिश की थी और एक बार उनकी नसों को काटने की भी कोशिश की थी। उन्होंने खुद अपने ऊपर मिट्टी का तेल डाला था और खुद को फिर से स्थापित किया था। अपीलार्थी ने बस बाल्टी से पानी डाल कर मामले को शांत करने की कोशिश की थी।

7. अपीलार्थी द्वारा इस प्रकार स्थापित बचाव पक्ष को उनके लगातार झगड़े और मृतक पत्नी को दिए गए उत्पीड़न के बारे में रिकॉर्ड पर भारी सबूतों को देखते हुए नीचे दी गई किसी भी

अदालत द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था। गवाहों के नेत्र साक्ष्य ने स्पष्ट रूप से साबित किया कि घटना की तारीख को, दोनों के बीच फिर से एक छोटे से मामले पर झगड़ा हुआ था, लेकिन मृतक पत्नी, अपीलार्थी के हाथों यातना से बचने और उसे रोकने के लिए, रसोई के अंदर गई और खुद पर मिट्टी का तेल डाला। इसके बाद, अपीलार्थी ने स्थिति का लाभ उठाया और उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

8. हमने पक्षों के विद्वान वकील को सुना था।

9. अपीलार्थी के विद्वान वकील ने तर्क दिया था कि अपीलार्थी का मृत पत्नी को मारने का कोई पूर्व नियोजित मन नहीं था और उसका उसे मारने का भी कोई इरादा नहीं था। इसलिए, भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 303 के प्रावधान लागू नहीं होते हैं और अधिकतम उन पर भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 304 भाग-2 के अंतर्गत आरोप लगाया जा सकता है।

10. उपरोक्त निवेदन का इस आधार पर कड़ा विरोध किया गया है कि अपीलार्थी ने मृत पत्नी को यह जानते हुए माचिस की छड़ी से जला दिया था कि वह मिट्टी के तेल में भीगी हुई है और माचिस की छड़ी की बिजली और उसे उस पर फेंकने से निश्चित रूप से उसकी मौत हो जाएगी।

11. हाथ में मामले में, निश्चित रूप से, रिकॉर्ड पर कई मृत्यु घोषणाएं हैं। पहली मृत्यु घोषणा कथन Ext.P1 के रूप में है। मृतक पत्नी का यह बयान उसकी मृत्यु से पहले न्यायिक प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट, एर्नाकुलम, यानी पीडब्लू 5 के समक्ष दिया गया था। उक्त कथन स्पष्ट रूप से मृत पत्नी की मृत्यु के कारण और परिस्थितियों का खुलासा करता है।

177

अनिल कुमार बनाम केरल राज्य [पंकाज मिट्टल, जे.] 178

12. दूसरा बयान जिसे मृत्यु घोषणा के रूप में पढ़ा जा सकता है, वह है Ext.P1 0, जो PW16, हेड कांस्टेबल, कुरुप्पमपाडी पुलिस द्वारा जनरल अस्पताल, एर्नाकुलम में दर्ज किया गया है, जिसमें मृतक पत्नी ने भी अपनी मृत्यु की घटना के संबंध में Ext.P1 में वही कथन दोहराया है।

13. उपरोक्त दोनों बयानों को अगर एक साथ पढ़ा जाए, तो यह पता चलेगा कि उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन अपीलार्थी ने शराब के नशे अंतर्गत मृत पत्नी पर हमला किया था। उसने उसकी छाती पर भी प्रहार किया और उसे धक्का दिया। उक्त घटना के समय बच्चे आंगन में खेल रहे थे। जब अपीलार्थी का हमला असहनीय हो गया, तो उसने रसोई से मिट्टी के तेल की छड़ी ली और उसे अपने शरीर पर डाल दिया, जिसके बाद उसके पति ने एक माचिस की छड़ी जलाकर उसे जला दिया।

14. मजिस्ट्रेट (पीडब्लू 5), जिनके समक्ष मृत्यु घोषणाओं में से एक दर्ज की गई थी, बयान की शुद्धता को साबित करता है और जब मृतक का बयान दर्ज किया गया था, तो वह सुसंगत और उन्मुख थी। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उनके पास यह मानने का कोई कारण

नहीं था कि मृतक बयान देने की स्थिति में नहीं था या उसके द्वारा दिया गया बयान किसी भी कारण से दूषित है। पीडब्लू 5 के बयान का समर्थन पीडब्लू 14 (डॉ. के. वेणुगोपाल) ने किया था।

15. मृतक पत्नी के बयान में आगे स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अपीलार्थी को शराब पीने की आदत थी और वह नशे की हालत में अक्सर उस पर हमला करता था। उन्होंने यह भी कहा कि इसी तरह के हमलों के संबंध में अपीलार्थी के खिलाफ विभिन्न आपराधिक मामले लंबित हैं। उपरोक्त पहलू, जैसा कि मृतक द्वारा कहा गया है, की पुष्टि पीडब्लू 21 (इन्वेस्टिगेटिंग ऑफिसर) की गवाही से हुई थी। यहां तक कि डी. डब्ल्यू. 1 (साजी मैथ्यू) ने यह भी साबित किया कि मृतक ने अस्पताल में भर्ती होने के समय उसकी जलने की चोटों के बारे में बताया और आरोप लगाया कि उसके पति ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया और उसने खुद पर मिट्टी का तेल डाला था, जिसके बाद उसके पति ने उसे फांसी पर चढ़ाया था। मेडिकल रिपोर्ट से पता चलता है कि मृतक 96 प्रतिशत जल गया था।

16. घटना को पीडब्लू 1 (सहजन) और पीडब्लू 2 (गोपालकृष्णन) की मौखिक गवाही से भी साबित किया गया, पड़ोसी जो मृतक को जीप में अस्पताल ले गए और मृतक को जलती हुई स्थिति में देखा। 17. उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों और अभिलेख पर भारी साक्ष्य को देखते हुए, निष्कर्ष से कोई बच नहीं सकता है।

/

[2023] 14 एस सी आर।

कि मृतक की जलने की चोटों से मृत्यु हो गई। उसने खुद अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डाला था और अपीलार्थी ने उसे आग लगा दी थी और बाद में पानी डालकर उसे बुझाने की कोशिश की थी। अपीलार्थी मृतक के साथ अस्पताल भी गया।

18. अब विचार करने के लिए एकमात्र बिंदु यह है कि क्या उपरोक्त परिस्थितियों में, अपीलार्थी का मृतक को मारने का कोई पूर्व नियोजित मन था या क्या यह गंभीर और अचानक उकसावे के कारण था जो हत्या के बराबर नहीं होगा या सबसे अच्छा गैर-इरादतन हत्या का मामला होगा जो हत्या के बराबर नहीं होगा, जिसके लिए 10 साल तक की अवधि के कारावास या भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 304 भाग-II के अंतर्गत या दोनों के साथ दंडनीय होगा। 19. उनके उपरोक्त तर्क के समर्थन में, अपीलार्थी के विद्वान वकील ने कालू राम बनाम राजस्थान राज्य 2 पर भरोसा किया, जो जलाकर एक्सोरिसाइड के संबंध में इसी तरह का मामला था। हालाँकि, भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 300 के अपवाद 4 का उल्लेख करना प्रासंगिक और सामग्री होगी जो अपीलार्थी को उपरोक्त निर्णय का लाभ देने से पहले "हत्या" की अवहेलना करता है। उक्त अपवाद इस प्रकार है:

“अपवाद 4.— दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि यह अचानक झगड़े पर जुनून की गर्मी में अचानक पूर्व-चिंतन के बिना और अनुचित लाभ उठाए बिना या क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य किए बिना किया जाता है।

स्पष्टीकरण .—इस तरह के मामलों में यह मायने नहीं रखता कि कौन सा पक्ष उकसाता है या पहला हमला करता है। ”

20. यह उपरोक्त अपवाद के बल पर है कि अपीलार्थी की ओर से यह तर्क दिया गया है कि अपीलार्थी हत्या का दोषी नहीं है क्योंकि उसका कोई पूर्व नियोजित मन नहीं था और अपीलार्थी की कार्रवाई अचानक हुई थी। पहले स्थान पर, फाई जीएचटी अचानक नहीं था। अपीलार्थी और मृतक पत्नी के बीच झगड़े का पिछला इतिहास रहा है और वे वास्तविक घटना से पहले से ही उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन भी झगड़ रहे थे। उनके झगड़े के दौरान, एक पड़ोसी/(सहजन) यानी पीडब्लू¹ उनके घर गया था और मृतक पत्नी ने हमले के दौरान उसे लगी कुछ चोटों को दिखाया था। हालाँकि, दोनों के बीच झगड़े को महसूस करते हुए, वह यह कहते हुए चला गया कि वह बाद में आएगा। इसके बाद मिट्टी का तेल डालने की घटना और

2 (2000) 10 एस. सी. सी. 324179

अनिल कुमार बनाम केरल राज्य [पंकज मिट्टल, जे.] 180

जलाया गया। इसलिए, दोनों कृत्यों के बीच पर्याप्त समय था और यह नहीं कहा जा सकता है कि अचानक झगड़ा और उकसावे के कारण आग लग गई थी। अपीलार्थी ने मृत पत्नी को मिट्टी के तेल में भीगे हुए देखा और उसे पता था कि अगर उसे जलाया गया तो वह जलकर मर जाएगी, फिर भी उसने उसे आग लगा दी। यह उसे मारने के लिए पूर्व नियोजित मन को दर्शाता है। विशेष रूप से, अपीलार्थी चौथे अपवाद का लाभ केवल इस बहाने से नहीं उठा सकता है कि यह पूर्व नियोजित मन के कारण या अचानक हुए अपराध के कारण नहीं था या कि उसके इरादे बुरे नहीं थे क्योंकि उसने अपराध को शांत करने और मृत पत्नी के जीवन को बचाने के लिए अपनी पूरी कोशिश की थी क्योंकि उपरोक्त अपवाद का लाभ उसे उपलब्ध होता, अगर उसने स्थिति का अनुचित लाभ नहीं उठाया होता।

21. अपवाद में स्पष्ट रूप से स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह लागू होगा जहां गैर-इरादतन हत्या न केवल पूर्व-नियोजित दिमाग के बिना अचानक लड़ाई या झगड़े में की जाती है, बल्कि स्थिति का "अनुचित लाभ" उठाए बिना भी की जाती है। तत्काल मामले में, अपीलार्थी ने मृतक को मिट्टी के तेल में भीगे हुए देखकर स्पष्ट रूप से स्थिति का लाभ उठाया और एक माचिस की छड़ी जलाकर उस पर फेंक दी ताकि उसे जलाया जा सके। स्थिति का "अनुचित लाभ" उठाने वाले अपीलार्थी को भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 300 के अपवाद 4 का लाभ नहीं दिया जा सकता है ताकि मामले को भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 304 के भाग-2 के दायरे में लाया जा सके।

22. उपरोक्त कानूनी स्थिति को ध्यान में रखते हुए, ऊपर उद्धृत निर्णय, अर्थात्। कालूराम (ऊपर) से अपीलार्थी को कोई लाभ नहीं होगा।

23. प्रथम सूचना रिपोर्ट और अभिलेख पर मृत्यु की घोषणाओं में स्पष्ट रूप से मृतक का बयान है कि जब उसने अपीलार्थी को गोली मारने और हमला करने से रोकने के लिए अपने ऊपर मिट्टी का तेल डाला था, तो उसने एक माचिस की छड़ी जलाई और उसे मारने के इरादे से उस पर फेंक दिया।

"तुम मर जाते हो" कहकर।

24. उपरोक्त साक्ष्य इस मुद्दे को पुष्ट करता है और संदेह से परे यह स्थापित करता है कि अपीलार्थी गैर इरादतन हत्या के अपराध का दोषी है और भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 300 के अपवाद 4 का लाभ उठाने का हकदार नहीं है।

25. तदनुसार, हमारी राय है कि निचली अदालतों ने उसे दोषी ठहराने और अधिकतम आजीवन कारावास की सजा देने में तथ्य या विधि की कोई त्रुटि नहीं की है।

/

[2023] 14 एस सी आर।

26. तदनुसार अपील में योग्यता का अभाव है और इसे खारिज कर दिया जाता है। तथापि, हम देखेंगे कि अपीलार्थी जो जेल में है, सामान्य रूप से राज्य की प्रचलित नीति के अनुसार छूट के लिए आवेदन करने के लिए स्वतंत्र हो सकता है।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

याचिका खारिज कर दी गई।

अंकित ज्ञान